Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 5, October-2022, ISSN 2230-7540

राजस्थान में शहरीकरण के स्तरों में रुझान और पैटर्न पर शोध पत्र (1901 से 2011)

सुख लाल यादव[1*], प्रोफेसर डॉ. राजीव कुमार जैन[2]

[1] पीएच.डी शोधकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

[2] प्रोफेसर (कला विभाग), सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार - *शहरीकरण एक ऐसे समाज के परिवर्तन की प्रक्रिया को संदर्भित करता है जो मुख्य रूप से चरित्र , अर्थव्यवस्था, संस्कृति और जीवन शैली में ग्रामीण है, जो मुख्य रूप से शहरी है जो मूल रूप से औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में लगा हुआ है। शहरीकरण को एक पुरानी प्रक्रिया कहा जा सकता है लेकिन हाल के दशकों में शहरीकरण में तेजी देखी गई है। संयुक्त राष्ट्र (2014) के अनुसार 2050 तक दुनिया की लगभग दो तिहाई आबादी शहरी वातावरण में रहने के लिए तैयार है। इस संबंध में भारतीय परिदृश्य यह है कि विकसित दुनिया की तुलना में देश में शहरीकरण का स्तर कम है (2011 में 31.2%)। लेकिन शहरी क्षेत्रों में बहुत बड़ी संख्या में लोग रहते हैं और दुनिया की शहरी आबादी का 10.6% हिस्सा है। शहरी क्षेत्र पूरे देश के लिए आर्थिक विकास चालकों के रूप में उभर रहे हैं और राजस्थान कोई अपवाद नहीं है। लेकिन पूरे भारत में 31.2% की तुलना में राज्य में 2011 में शहरीकरण में मामूली वृद्धि हुई है यानी 24.87%। शहरीकरण के रुझानों और स्तरों का अध्ययन शुरू से ही शहरी भूगोल का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। वर्तमान पेपर में भारत की जनगणना (1901 से 2011) डेटा का उपयोग आर्कव्यू जीआईएस आधारित कोरोप्लेथ मैप के माध्यम से एक्सेल आधारित कार्टोग्राफी और स्थानिक पैटर्न के माध्यम से अस्थायी परिवर्तन को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। राजस्थान में शहरी आबादी में वृद्धि मुख्य रूप से ग्रामीण-शहरी प्रवासन और 2011 की जनगणना में जनगणना शहरों के रूप में 100 ग्रामीण बस्तियों को शामिल करने के कारण है। वर्तमान पेपर 1901 से 2011 के दौरान भारतीय जनगणना के आंकड़ों का उपयोग करते हुए राजस्थान में शहरीकरण के स्तरों में अंतर-जिला भिन्नता को समझने पर केंद्रित है।*

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष यह हैं कि राजस्थान में शहरी आबादी पिछले ग्यारह दशकों के दौरान ग्यारह गुना से अधिक यानी 1901 में 1.48 मिलियन से बढ़कर 2011 में 17.05 मिलियन हो गई। राज्य में शहरीकरण का स्तर 1901 में 14.41% से बढ़कर 24.87% हो गया है। 2011. कोटा, जयपुर और अजमेर में शहरीकरण का स्तर बहुत ऊंचा है यानी क्रमशः 60.3%, 52.4% और 40.1%। जबकि डूंगरपुर (6.4%), बाड़मेर (7.0%), बांसवाड़ा (7.1%), प्रतापगढ़ (8.3%) और जालोर (8.3%) जिलों में शहरीकरण का स्तर बहुत कम है। गरीबी की उच्च दर वाले जिले कम शहरीकृत हैं और इसके विपरीत।

कुंजी शब्द - *शहरीकरण, शहरीकरण के स्तर, परिवर्तन, आर्थिक विकास चालक*

----------X----------

परिचय

शहरीकरण एक ऐसे समाज के परिवर्तन की प्रक्रिया को संदर्भित करता है जो मुख्य रूप से चरित्र , अर्थव्यवस्था, संस्कृति और जीवन शैली में ग्रामीण है , जो मुख्य रूप से शहरी है जो मूल रूप से औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में लगा हुआ है। शहरीकरण के स्तर को शहरी स्थानों में रहने वाली कुल आबादी के अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है (ट्रेवार्था, जी.टी.)। शहरीकरण को एक पुरानी

प्रक्रिया कहा जा सकता है लेकिन हाल के दशकों में शहरीकरण में तेजी देखी गई है। नगरों की जनसंख्या में उच्च वृद्धि तथा नगरों की संख्या में भी तीव्र वृद्धि आधुनिक काल की प्रमुख विशेषताएँ हैं (बंसल , एस.सी.)। कृषि क्रांति, औद्योगिक क्रांति, परिवहन क्रांति, शिक्षा और प्रौद्योगिकी में क्रांति, रोजगार के अवसर और पुश एंड पुल कारक जैसे कई कारक शहरीकरण के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार रहे हैं। शहरीकरण के कारकों में, पुश एंड पुल कारकों के प्रभाव में ग्रामीण-शहरी प्रवासन शहरीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हर हफ्ते करीब 30 लाख लोग शहरों की ओर जा रहे हैं (इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉर माइग्रेशन-2015)। औद्योगीकरण और शहरीकरण साथ-साथ चलते हैं। शहरीकरण एक चक्रीय प्रक्रिया है जिसके माध्यम से राष्ट्र गुजरते हैं जैसे वे कृषि समाज से औद्योगिक समाज (ट्रेवार्था , जी.टी.) में विकसित होते हैं। वास्तव में औद्योगीकरण और शहरीकरण ने शहरीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है और परिणामस्वरूप आधी दुनिया पहले से ही शहरीकृत है। शहरीकरण , वास्तव में, एक समुदाय के सामाजिक जीवन और आर्थिक गतिविधियों के पूरे परिदृश्य में भारी बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। शहरीकरण की तीव्र दर निस्संदेह 21वीं सदी में आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाली प्रमुख प्रक्रियाओं में से एक है (कुंदू, ए.)। यह उजागर करना दिलचस्प है कि शहरीकरण स्वयं एक समाज में आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों का एक उत्पाद है और बदले में यह अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी में और परिवर्तन लाता है। यह वह तकनीक है जो अर्थव्यवस्था के साथ-साथ शहरीकरण की गति और चरित्र को आकार देती है। शहरीकरण और तकनीकी परिवर्तन की अन्योन्याश्रितता के कई अलग-अलग उदाहरण हैं, हालांकि अक्सर कारण और प्रभाव को अलग करना मुश्किल होता है (नॉक्स, पॉल एल।)। संयुक्त राष्ट्र (2014) के अनुसार शहरीकरण 2050 तक दुनिया की लगभग दो तिहाई आबादी शहरी वातावरण में रहने के लिए तैयार है। यह भविष्यवाणी की गई है कि 2050 तक लगभग 64% विकासशील दुनिया और 86% विकसित दुनिया शहरीकृत हो जाएगी। अर्थशास्त्री। 27 अक्टूबर , 2012)। इस संबंध में भारतीय परिदृश्य यह है कि विकसित दुनिया की तुलना में देश में शहरीकरण का स्तर कम है (2011 में 31.2%) लेकिन शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की संख्या बहुत बड़ी है और दुनिया की शहरी आबादी का 10.6% है। शहरी क्षेत्र पूरे देश के लिए आर्थिक विकास चालकों के रूप में उभर रहे हैं और राजस्थान कोई अपवाद नहीं है। लेकिन राज्य में 2011 में शहरीकरण में मामूली वृद्धि देखी जा रही है | यानी पूरे भारत के 31.2% की तुलना में 24.87%।

इस पेपर के बारे में: शहरीकरण के रुझानों और स्तरों का अध्ययन शुरू से ही शहरी भूगोल की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है। वर्तमान अध्ययन केवल राजस्थान राज्य पर और 1901 से 2011 की अवधि के लिए केंद्रित है। राजस्थान के विभिन्न जिलों की 2011 की जनगणना जिला जनगणना पुस्तिका (DCHB) से संकलित शहरीकरण के रुझानों का पता लगाने के लिए दीर्घकालिक डेटा का उपयोग किया जाता है। प्रस्तुत पेपर 1901 से 2011 तक राजस्थान (भारत) राज्य में शहरीकरण के रुझानों को उजागर करने का एक प्रयास है। वर्ष 2011 के लिए शहरीकरण के स्थानिक पैटर्न और दशक 2001-11 के दशक के विकास दर की गणना की गई और मानचित्र पर प्रस्तुत किया गया। जनगणना वर्ष 1901 से 2011 के लिए भारत की जनगणना के आंकड़ों का उपयोग शहरी आबादी के विकास में रुझान का पता लगाने के लिए किया जाता है। वर्तमान पेपर 1901 से 2011 तक के जनगणना वर्षों के लिए भारतीय जनगणना के आंकड़ों का उपयोग करते हुए राजस्थान में शहरीकरण के स्तरों में अंतर-जिला भिन्नता और दशकीय वृद्धि को समझने पर केंद्रित है।

उद्देश्य

वर्तमान शोध पत्र ***"राजस्थान में शहरीकरण के स्तरों में रुझान और पैटर्न (1901 - 2011)"*** लिखते समय निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखा गया था।

- 1901 से 2011 तक राजस्थान राज्य में शहरीकरण के रुझानों का आकलन करना।
- वर्ष 2011 के लिए राजस्थान में शहरीकरण के स्थानिक पैटर्न पर प्रकाश डालना।
- शामिल शहरीकरण प्रक्रियाओं का पता लगाने के लिए।
- गरीबी की दर और शहरीकरण के बीच संबंध का पता लगाना।

कार्यप्रणाली

इस शोध पत्र को लिखते समय निम्नलिखित पद्धति को अपनाया गया था। इस पेपर की कार्यप्रणाली काफी स्पष्ट और सरल है। राजस्थान में शहरीकरण के रुझानों की

www.ignited.in

स्थापना करते हुए , अध्ययन अवधि (1901 से 2011) के लिए भारत की जनगणना के आंकड़ों का उपयोग किया जाता है। एक्सेल आधारित कार्टोग्राफी का उपयोग करके तैयार सरल रेखा ग्राफ का उपयोग शहरीकरण के रुझानों को दर्शाने के लिए किया जाता है। वर्ष 2011 के लिए राजस्थान में शहरीकरण के पैटर्न और दशक 2001-11 के लिए शहरी आबादी के दशकीय विकास के स्थानिक पैटर्न का प्रदर्शन करते हुए , आर्कव्यू जीआईएस सॉफ्टवेयर का उपयोग कोरोप्लेथ मैप तैयार करने के लिए किया जाता है। शहरीकरण और शहरी आबादी में दशकीय वृद्धि से संबंधित आंकड़ों की गणना राजस्थान के विभिन्न जिलों की जिला जनगणना पुस्तिका-2011 से की जाती है।

परिणाम और चर्चा

वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से i) राजस्थान में शहरीकरण के स्तरों में रुझान ii) 2011 में राजस्थान में शहरीकरण के स्थानिक पैटर्न पर परिणाम और चर्चा प्राप्त करने के लिए डेटा के विश्लेषण पर केंद्रित है।

राजस्थान में शहरीकरण के रुझान

राजस्थान में शहरी आबादी 1901 में 1.48 मिलियन से बढ़कर 2011 में 17.05 मिलियन हो गई। यह इंगित करता है कि राजस्थान में पूर्ण शहरी आबादी|

तालिका-I: शहरीकरण के स्तर में राजस्थान की प्रवृत्ति (1901 से 2011)

जनगणना वर्ष	शहरीकरण का स्तर % में	जनगणना वर्ष	शहरीकरण का स्तर % में
1901	14.41	1961	16.18
1911	12.87	1971	17.4
1921	13.73	1981	20.49
1931	14.15	1991	22.39
1941	14.67	2001	24.52
1951	17.1	2011	24.87

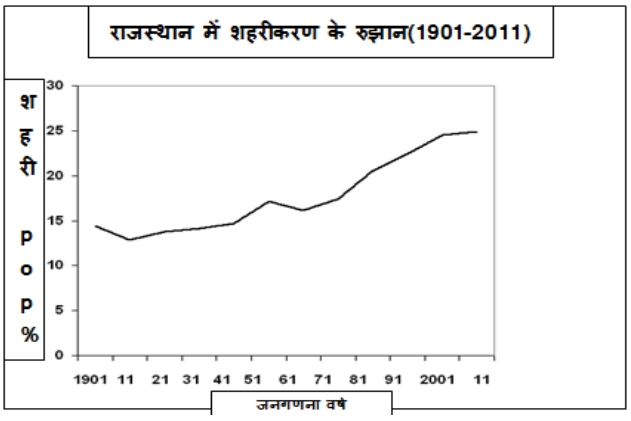

चित्र-I

पिछले ग्यारह दशकों के दौरान ग्यारह गुना से अधिक की वृद्धि हुई है। जबकि शहरीकरण का स्तर (शहरी जनसंख्या कुल जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में) दोगुना भी नहीं हो सका क्योंकि ग्रामीण और शहरी आबादी की वृद्धि दर के बीच बहुत कम अंतर रहा है। राजस्थान में शहरीकरण का स्तर 1901 में 14.41% से 2011 में 24.87% तक लगातार बढ़ती प्रवृत्ति दर्शाता है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि 1901 और 1941 के बीच की अवधि के दौरान राजस्थान में शहरीकरण का स्तर पूरे भारत की तुलना में बहुत अधिक था। 1901 में पूरे भारत में 10.84% की तुलना में 14.41% जनसंख्या राजस्थान के शहरी क्षेत्रों में रह रही थी। वर्ष 1941 में राजस्थान और पूरे भारत में ये आंकड़े क्रमशः 14.67% और 13.86% थे। सन् 1951 में राजस्थान में शहरीकरण का स्तर अखिल भारतीय स्तर पर था , लेकिन 1961 के बाद से राजस्थान शहरीकरण के स्तर की दृष्टि से अखिल भारतीय स्तर से पिछड़ गया। वर्ष 2011 में लगभग 31.16% जनसंख्या भारत के शहरी क्षेत्रों में रह रही थी जबकि राजस्थान में केवल 24.87% जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में रह रही थी। वर्ष 2011 में राजस्थान में नगरीय जनसंख्या का अनुपात 24.87% था जो राष्ट्रीय औसत 31.16% से कम है। यदि हम गुजरात (42.6%) , पंजाब (37.5%), हरियाणा (34.9%) जैसे निकटवर्ती राज्यों में 2011 के शहरीकरण स्तरों की तुलना करें। और मध्य प्रदेश (27.6%) हम पाते हैं कि राजस्थान पिछड़ रहा है।

तालिका-I में डेटा पर एक नज़र डालने के बाद , संपूर्ण अध्ययन अवधि को तार्किक रूप से राजस्थान राज्य में शहरीकरण की तीन प्रमुख अवधियों में विभाजित किया जा सकता है। ये हैं :

i. धीमे शहरीकरण की अवधि (1901 से 1941)

ii. मध्यम शहरीकरण की अवधि (1951 से 1971)

iii. तीव्र शहरीकरण की अवधि (1981 से 2011)

i. धीमे शहरीकरण की अवधि (1901 से 1941): 1901 और 1941 के बीच की अवधि ने न केवल राजस्थान बल्कि पूरे देश में धीमे शहरीकरण का प्रदर्शन किया है। यह आदिम कृषि अर्थव्यवस्था का काल था। वास्तव में यह अवधि विशेष रूप से 1905 , 1908, 1911 और 1918 के वर्षों में अकाल और महामारियों द्वारा चिह्नित की गई थी। इस अवधि के दौरान हैजा , मलेरिया, चेचक, प्लेग और इन्फ्लूएंजा जैसी कई महामारियां हुईं। आम तौर पर ये महामारियां अकाल से जुड़ी थीं, फलस्वरूप राज्य के लगभग सभी शहरों में जनसंख्या में गिरावट आई। 1901 में शहरी स्थानों में रहने वाली आबादी का अनुपात 14.41% घटकर 1911 में 12.87% हो गया। 1918-19 की महामारी इन्फ्लूएंजा ने राज्य के शहरी क्षेत्रों में भारी मृत्यु दर का कारण बना। 1920 के बाद ही राज्य के शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि शुरू हुई , लेकिन बहुत धीमी गति से। 1941 में शहरीकरण का स्तर 14.67% तक पहुंच गया जो 1901 में शहरीकरण के स्तर से सिर्फ 0.26% अधिक था। इस अवधि के लिए शहरीकरण के स्तर का औसत मूल्य 14% रहा।

ii. मध्यम शहरीकरण की अवधि (1951 से 1971): 1951 और 1971 के बीच की अवधि में राजस्थान में मध्यम शहरीकरण हुआ। कुल जनसंख्या में शहरी आबादी का अनुपात 1941 में 14.67% से बढ़कर 1951 में 17.1% हो गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि राजस्थान ने देश के विभाजन के समय सिंध , बलूचिस्तान और बहावलपुर रियासतों के लाखों प्रवासियों को शरण दी थी। इन प्रवासियों को राजस्थान के लगभग सभी शहरों में रखा और बसाया गया था। इस तथ्य की पुष्टि राजस्थान के लगभग सभी प्रमुख शहरों में सिंधी कालोनियों के अस्तित्व से होती है। वर्ष 1961 में शहरीकरण का स्तर गिरकर 16.18% हो गया क्योंकि 1951-61 के दशक के दौरान शहरी आबादी (19.5%) की तुलना में ग्रामीण आबादी की वृद्धि अधिक (27.6%) रही। 1971 में शहरीकरण का स्तर थोड़ा बढ़ा और 17.4% तक पहुंच गया। वास्तव में इस अवधि के दौरान शहरीकरण का औसत स्तर 17% रहा।

iii. तीव्र शहरीकरण की अवधि (1981 से 2011): 1981 और 2011 के बीच की अवधि को राजस्थान में तेजी से शहरीकरण का काल कहा जा सकता है। यह राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे देश में सुधारों का युग था। औद्योगिक विकास ने ग्रामीण क्षेत्रों से अधिशेष जनशक्ति को आकर्षित किया और ग्रामीण-शहरी प्रवास हुआ , फलस्वरूप शहरी क्षेत्रों में तेजी से जनसंख्या वृद्धि हुई। कुल जनसंख्या में शहरी आबादी का अनुपात 1971 में 17.4% से बढ़कर 1981 में 20.49% हो गया। 1991 , 2001 और 20011 की लगातार जनगणना के वर्षों में राज्य में शहरीकरण का स्तर क्रमशः 22.39%, 24.52 और 24.57% तक पहुंच गया। इस अवधि के लिए शहरीकरण का औसत स्तर 23% रहा।

2011 में राजस्थान में शहरीकरण के स्थानिक पैटर्न

शहरीकरण में स्थानिक पैटर्न परिवर्तन की परस्पर संबंधित प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला का परिणाम हैं। ये प्रक्रियाएं आर्थिक , तकनीकी, जनसांख्यिकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक हैं। शहरीकरण को बढ़ावा देने और आकार देने वाली गतिशीलता के मूल में आर्थिक कारक हैं। इन प्रक्रियाओं में भिन्नता शहरीकरण के पैटर्न में स्थानिक भिन्नता लाती है। परिवर्तन की अंतरसंबंधित प्रक्रिया में यह भिन्नता थी जिसने राजस्थान के विभिन्न जिलों के बीच शहरीकरण के स्तरों में अंतर लाया है। खनन और औद्योगिक विकास ने राजस्थान के शहरीकरण की प्रक्रिया में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। उद्योग राज्य के लगभग 32.5% सकल घरेलू उत्पाद में योगदान करते हैं। भीलवाड़ा , कोटा, जयपुर, उदयपुर, भिवाड़ी, नीमराना आदि में औद्योगिक विकास ने राज्य में शहरीकरण के स्थानिक स्वरूप को प्रभावित किया है। राष्ट्रीय राजधानी के निकटतम जिले भिवाड़ी-नीमराना (अलवर) के औद्योगिक और आर्थिक विकास पर नई दिल्ली के प्रभाव को आसानी से देखा जा सकता है। राजस्थान में शहरीकरण के स्तरों में स्थानिक पैटर्न को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारकों में भौगोलिक वातावरण में उच्च स्थानिक भिन्नता है। राजस्थान , वास्तव में , दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र के विकसित क्षेत्र और उत्तरी मैदानों के बीच एक विभाजक बेल्ट है , इसलिए बड़ी मात्रा में माल राज्य के माध्यम से गुजरता है। एक अच्छे परिवहन नेटवर्क के विकास के परिणामस्वरूप हुआ। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8, 11 (ए, बी और सी), 12, 14, 15, 65, 76, 89, 112, 113, 114, 116, 158,162 और 927ए ने भी राजस्थान की शहरीकरण प्रक्रिया में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। और निश्चित रूप से राज्य में शहरीकरण के पैटर्न को प्रभावित किया। राजमार्गों पर

www.ignited.in

स्थित कस्बों ने उद्योगों को आकर्षित किया और इसके परिणामस्वरूप तेजी से विकास हुआ। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कारकों में पर्यटन ने राजस्थान के शहरीकरण की प्रक्रिया में प्रभावी भूमिका निभाई है क्योंकि यह राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में 8% का योगदान देता है।

जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर और चित्तौड़गढ़ में पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षण है ; परिणामस्वरूप बहुत से पर्यटक अवसंरचनात्मक विकास हुए जिसने शहरीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। राजस्थान विश्वविद्यालय और जयपुर में मालवीय एनआईटी, जयपुर में आईआईटी, जयपुर में आईआईटी और कोटा में कोचिंग संस्थानों की एक आकाशगंगा जैसे शैक्षणिक संस्थानों के विकास ने भी राज्य में शहरीकरण पैटर्न को आकार देने में भूमिका निभाई है।

तालिका -2: राजस्थान में शहरीकरण का स्तर (2011)

क्र.सं.	जिला	कुल जनसँख्या	शहरी जनसंख्या	कुल जनसंख्या के% के रूप में शहरी जनसंख्या
1	कोटा	1951014	1176604	60.3
2	जयपुर	6626178	3471847	52.4
3	अजमेर	2583052	1035410	40.1
4	जोधपुर	3687165	1264614	34.3
5	बीकानेर	2363937	800384	33.9
6	चुरू	2039547	576235	28.3
7	गंगानगर	1969168	535432	27.2
8	सीकर	2677333	633906	23.7
9	झुंझुनूं	2137045	489079	22.9
10	पाली	2037573	460006	22.6
11	टोंक	1421326	317723	22.4
12	भीलवाड़ा	2408523	512654	21.3
13	नागौर	3307743	637204	21.3
14	बरन	1222755	254214	20.8
15	धौलपुर	1206516	247450	20.5
16	सिरोही	1036346	208654	20.1
17	बूंदी	1110906	222701	20.0
18	सवाईमाधोपुर	1335551	266467	20.0
19	उदयपुर	3068420	608426	19.8
20	हनुमानगढ़	1774692	350464	19.7
21	भरतपुर	2548462	495099	19.4
22	चितौड़गढ़	1544338	285264	18.5
23	अलवर	3674179	654451	17.8
24	झालावाड़	1411129	229291	16.2
25	राजसमंद	1156597	183820	15.9
26	करौली	1458248	218105	15.0
27	जैसलमेर	669919	89025	13.3
28	दौसा	1634409	201793	12.3
29	प्रतापगढ़	867848	71807	8.3
30	जालोर	1828730	151755	8.3
31	बांसवाड़ा	1797485	127621	7.1

तालिका -3: राजस्थान में शहरीकरण के स्तरों में स्थानिक भिन्नता (2011)

क्र.सं.	शहरीकरण में स्तर	जिले
1	बहुत कम (8.3% और नीचे)	डूंगरपुर, बाड़मेर, बांसवाड़ा, जालोर और प्रतापगढ़.
2	कम (8.4 से 16.0%)	दौसा, जैसलमेर, करौली और राजसमंद
3	मध्यम (16.1 से 24.0%)	झालावाड़, अलवर, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, हनुमानगढ़, उदयपुर सवाईमाधोपुर, बूंदी, सिरोही, धौलपुर, बारां, नागौर, भीलवाड़ा, टोंक, पाली, झुंझुनूं, सीकर, गंगानगर और चूरू।
4	उच्च (24.1 से40%)	गंगानगर, चूरू, बीकानेर और जोधपुर।
5	बहुत अधिक (40% से अधिक)	अजमेर, जयपुर और कोटा

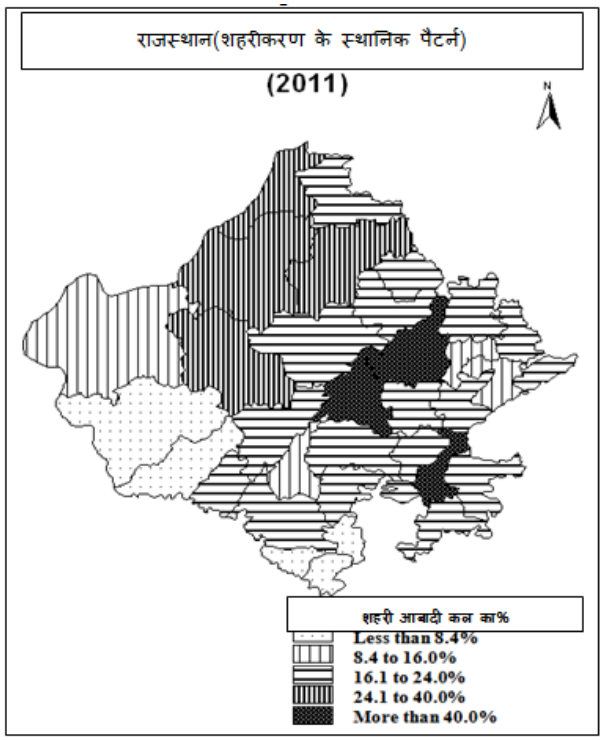

चित्र-2 और तालिका-III 2011 में शहरीकरण के स्तर के पैटर्न प्रस्तुत करता है। ये पैटर्न कार्यवाही पैराग्राफ में वर्णित हैं।

1. शहरीकरण के अति निम्न स्तर के क्षेत्र:- शहरीकरण के 8.4%% से कम स्तर

वाले क्षेत्रों को शहरीकरण के बहुत निम्न स्तर के क्षेत्रों के रूप में नामित किया गया है। पांच जिले डूंगरपुर (6.4%) , बाड़मेर (7.0%) , बांसवाड़ा (7.1%) , जालोर (8.3%) और प्रतापगढ़ (8.3%) इस श्रेणी में आते हैं। ये सभी जिले आर्थिक रूप से पिछड़े हैं क्योंकि इनमें उद्योगों की कमी है और ये केवल कृषि पर निर्भर हैं। आर्थिक विकास और शहरीकरण का बहुत मजबूत सकारात्मक सहसंबंध है। इस श्रेणी के अंतर्गत आने वाले जिलों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली आबादी का प्रतिशत बहुत अधिक है , इसलिए राजस्थान के सबसे कम शहरीकृत जिले हैं। भंडारी और चक्रवर्ती के अनुसार , बांसवाड़ा में राज्य में सबसे अधिक गरीबी दर (24.9%) है , इसके बाद दुर्गापुर (24.8%) और प्रतापगढ़ (21.4%) का स्थान है। शहरीकरण स्तर की इस श्रेणी में आने वाले बाड़मेर और जालौर जिलों में भी क्रमशः 18.2% और 17.1% की उच्च गरीबी दर है।

2. शहरीकरण के निम्न स्तर के क्षेत्र:- 8.4% और 16.0% के बीच शहरीकरण के स्तर वाले क्षेत्रों को शहरीकरण के निम्न स्तर के क्षेत्रों के रूप में नामित किया गया है। दौसा (12.3%), जैसलमेर (13.3%) , करौली (15.0%) , और राजसमंद (15.9%) जिले इस श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। ये जिले भी आर्थिक रूप से कम विकसित हैं , फलस्वरूप कम शहरीकृत हैं। जैसलमेर एक विशिष्ट रेगिस्तानी जलवायु और अल्प वितरण आबादी और मानव बस्तियों का अनुभव करता है। राजसमंद, दौसा और करौली मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर हैं। शहरीकरण स्तर की इस श्रेणी में आने वाले करौली जिले में गरीबी दर 19.4% है , इसके बाद जैसलमेर (18.8%) , दौसा (16.3%) और राजसमंद (15.2%) का स्थान है। इन जिलों में उच्च गरीबी दर शहरीकरण की प्रक्रिया में एक बड़ी बाधा बन गई।

3. शहरीकरण के मध्यम स्तर के क्षेत्र:- शहरीकरण के 16.1% और 24.0% के बीच के स्तर वाले क्षेत्रों को शहरीकरण के मध्यम स्तर के क्षेत्रों के रूप में नामित किया गया है। झालावाड़ (16.2%) , अलवर (17.8%) , चित्तौड़गढ़ (18.5%) , भरतपुर (19.4%) , हनुमानगढ़ (19.7%), उदयपुर (19.8%) , सवाईमाधोपुर (20.0%) , बूंदी (20.0%), सिरोही (20.1%), धौलपुर (20.5%), बारां (20.8%), नागौर (21.3%) , भीलवाड़ा (21.3%) , टोंक (22.4%), पाली (22.6%), झुंझुनूं (22.9%) और सीकर (23.7%), इस श्रेणी में आते हैं। ये जिले कृषि की दृष्टि से उन्नत हैं और कुछ औद्योगिक आधार भी हैं , जिसके परिणामस्वरूप मध्यम स्तर का शहरीकरण हुआ है।

4. शहरीकरण के उच्च स्तर के क्षेत्र:- 24.1% और 40.0% के बीच शहरीकरण के स्तर वाले क्षेत्रों को शहरीकरण के उच्च स्तर के क्षेत्रों के रूप में नामित किया गया है। गंगानगर (27.2%) , चूरू (28.3%) , बीकानेर (33.9%) और जोधपुर (34.3%) जिले इस श्रेणी में आते हैं। इन जिलों में गंग नहर और इंदिरा गांधी नहर के निर्माण से पीने और सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हुआ , जिसके परिणामस्वरूप कृषि और आर्थिक विकास हुआ। गंगानगर जिले की गरीबी दर केवल 8.0% है और यह राज्य में सबसे कम गरीबी दर वाले जिले हनुमानगढ़ के

www.ignited.in

बाद आता है। चुरू , बीकानेर और जोधपुर जिलों में गरीबी दर क्रमशः 10.9%, 12.2% और 13.9% है। इन कारकों ने इन क्षेत्रों में शहरीकरण के स्तर को बढ़ाया।

5. अति उच्च स्तर के शहरीकरण वाले क्षेत्र:- 40.0% से अधिक शहरीकरण के स्तर वाले क्षेत्रों को शहरीकरण के बहुत उच्च स्तर के क्षेत्रों के रूप में नामित किया गया है। अजमेर (40.1%) , जयपुर (52.4%) और कोटा (60.3%) जिले इस श्रेणी में आते हैं। राज्य में कोटा जिले में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है। कोटा एक शैक्षिक केंद्र के रूप में उभरा है और 1971 के बाद शहरी आबादी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कोटा जिला राज्य में तीसरे स्थान पर है जहां तक शहरी आबादी का आकार 2011 में लगभग 1.2 मिलियन की शहरी आबादी से संबंधित है। 2011 की जनगणना के अनुसार, जयपुर जिले में राज्य की सबसे बड़ी शहरी आबादी (3.47 मिलियन) है। अकेले जयपुर शहर , राज्य की राजधानी होने के नाते , 2011 में 3.04 मिलियन की आबादी है। अजमेर जिले में शहरी आबादी का एक बड़ा आकार 1.03 मिलियन 1 n 2011 है। सभी तीन जिले आर्थिक रूप से विकसित हैं और गरीबी की दर कम है (9.5 से 12.7%), फलस्वरूप शहरीकरण का उच्च स्तर।

निष्कर्ष

राजस्थान में शहरी आबादी पिछले ग्यारह दशकों के दौरान ग्यारह गुना से अधिक यानी 1901 में 1.48 मिलियन से बढ़कर 2011 में 17.05 मिलियन हो गई। जबकि शहरीकरण का स्तर दोगुना भी नहीं हो सका क्योंकि ग्रामीण विकास दर में बहुत कम अंतर रहा है। और शहरी आबादी। राजस्थान में शहरीकरण का स्तर 1901 में 14.41% से 2011 में 24.87% तक लगातार बढ़ती प्रवृत्ति दर्शाता है। राजस्थान में शहरीकरण का स्तर 1901 और 1941 के बीच की अवधि के दौरान पूरे भारत की तुलना में बहुत अधिक रहा। वर्ष 1951 में शहरीकरण का स्तर राजस्थान में शहरीकरण पूरे भारत के बराबर था लेकिन उसके बाद राज्य पिछड़ गया। राज्य में कुल आबादी में शहरी आबादी का अनुपात 1941 में 14.67% से बढ़कर 1951 में 17.1% हो गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि राजस्थान ने देश के विभाजन के समय सिंध , बलूचिस्तान और बहावलपुर रियासतों के लाखों प्रवासियों को शरण दी थी। वर्ष 2011 में राजस्थान में नगरीय जनसंख्या का अनुपात 24.87% था जो राष्ट्रीय औसत 31.16% से कम है। राजस्थान में शहरीकरण का स्तर आसपास के राज्यों की तुलना में कम है। 2011 में राजस्थान में शहरीकरण के स्तरों में भारी स्थानिक भिन्नता है। 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, डूंगरपुर जिले में शहरी क्षेत्रों में रहने वाले केवल 6.4% लोगों के साथ शहरीकरण का निम्नतम स्तर था , और कोटा जिले में शहरीकरण का उच्चतम स्तर यानी 60.3 था। % था , जबकि पूरे राज्य के लिए यह आंकड़ा 24.87% था। डूंगरपुर , बाड़मेर, बांसवाड़ा, जालौर और प्रतापगढ़ जिले सबसे कम शहरीकृत हैं , जबकि अजमेर , जयपुर और कोटा जिले सबसे अधिक शहरीकृत हैं। यह देखा गया है कि आम तौर पर गरीबी की उच्च दर वाले जिले कम शहरीकृत होते हैं और इसके विपरीत। राज्य में गरीबी की दर और शहरीकरण के स्तर के बीच मध्यम डिग्री नकारात्मक सहसंबंध (-0.66) मौजूद है।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

पुस्तकें:

1. बाला, राज। (1986) अर्बनाइजेशन इन इंडिया , रावत पब्लिशर्स, जयपुर
2. बंसल, एस.सी. (2010) शहरी भूगोल। मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ।
3. खुल्लर, डी. आर. (2010) भारत का भुगोल एवीएम प्रायोगिक भुगोल , कल्याणी पब्लिशर्स , नई दिल्ली।
4. नॉक्स, पॉल एल. (1994) अर्बनाइज़ेशन: एन इंट्रोडक्शन टू अर्बन ज्योग्राफी। प्रेंटिस हॉल , न्यू जर्सी।
5. प्रभा, के. (1979) टाउन्स : ए स्ट्रक्चरल एनालिसिस। अंतर-भारत प्रकाशन, दिल्ली-35।
6. रामचंद्रन, आर. (1989) अर्बनाइजेशन एंड अर्बन सिस्टम्स इन इंडिया। ऑक्सफोर्ड, नई दिल्ली।

अनुसंधान पत्रिकाएँ:

1. अंसारी, रबीउल एट अल (2013) पैटर्न ऑफ अर्बनाइजेशन माइग्रेशन एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट इन राजस्थान: ए डिस्ट्रिक्ट लेवल एनालिसिस, इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल्स , वॉल्यूम: II,

1. अंक : बारहवीं, जनवरी - 2013।

2. जोशी, के.एन. : राजस्थान पर राज्य स्तरीय पृष्ठभूमि पत्र , विकास अध्ययन संस्थान , 8-बी, झनलाना इंस्टीट्यूशनल एरिया जयपुर-302 004।

3. कुमार, बिजेंदर (2013) द रोल ऑफ अर्बनिज्म फॉर ज्यूडिशियस ग्रोथ ऑफ अर्बनाइजेशन इन हरियाणा- एन एनालिसिस, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज , वॉल्यूम। 2, संख्या 4, अप्रैल, 2013।

4. रानी, कविता (2017) ट्रेंड्स ऑफ अर्बनाइजेशन इन हरियाणा एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन एनवायरनमेंटल डिग्रेडेशन: एन एनालिसिस, जर्नल फॉर स्टडीज इन मैनेजमेंट एंड प्लानिंग , वॉल्यूम 03 अंक 11 अक्टूबर, 2017।

5. सीमा और सुमन (2017) इमर्जिंग ट्रेंड्स एंड पैटर्न ऑफ अर्बनाइजेशन इन हरियाणा , इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमर्जिंग ट्रेंड्स इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम 04 , अंक 08 , पेज 5534-5540, अगस्त, 2017, 20।

Corresponding Author

सुख लाल यादव*

पीएच.डी शोधकर्ता , सनराईस विश्वविद्यालय , अलवर, राजस्थान